माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत वंचित छात्रों के संदर्भ में पर्यावरण मूल्य का अध्ययन

*आशा विश्वकर्मा**

व्यक्तित्व एवं मानसिक विकास की व्याख्या करने वाले प्रायः समस्त आधुनिक सिद्धान्त यह स्वीकार करते हैं कि विकास व्यक्ति की आनुवांशिक क्षमताओं तथा पर्यावरण के मध्य अन्तः क्रिया का प्रतिफल है। व्यक्ति की आनुवांशिक क्षमताओं का विकास पर्यावरण में ही होता है तथा यही उन्हें दिशा प्रदान करता है। इस दृष्टिकोण की पुष्टि परिवेश–मनोविज्ञान, पारिस्थितिकी मनोविज्ञान तथा अन्तः सांस्कृतिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत किये जा रहे अनेक अध्ययनों से भी होती है। इस दिशा में अनेक मनोवैज्ञानिक प्रत्ययों को लेकर वंचित बालकों के विकास के सम्बन्ध में अध्ययन किये गये है। वंचन की स्थिति किसी जाति, समुदाय, धर्म या स्थान तक सीमित न होकर सार्वभौमिक है। सिंह (1993) ने वंचित तथा अवंचित किशोरों के तुलनात्मक अध्ययनों में जहाँ वंचित किशोरों को अन्तर्मुखी, कम बौद्धिक स्तर, सांवेगिक रूप से अस्थिर, गम्भीर, शर्मीला, अवसादी, रूढ़िवादी तथा निराशावादी व्यक्तित्व शीलगुणों वाला पाया वहीं दूसरी ओर अवंचित किशोर सामाजिक क्रियाओं में भाग लेने वाले बुद्धिमान, सांवेगिक रूप से परिपक्व, खुशमिजाज, प्रगतिवादी तथा तनावमुक्त पाये गये। वंचन के कारण ही समाज में विद्यार्थियों की मनोकामनाएँ, मूल्य, सोच, रूचि, अभिरूचि, अभिवृत्ति इत्यादि प्रभावित होती है। गोपाल (1992) ने अपने अध्ययन में पाया कि कक्षा के बाहर का वातावरण सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। अतः कम से कम प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को आवश्यक बनाना चाहिए। आनन्द (2002) ने वाराणसी शहर के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति के मध्य सहसम्बन्ध के अध्ययन में पाया कि जिन छात्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति अधिक थी उनमें पर्यावरण के प्रति जागरूकता भी अधिक थी। नीलम, जायसवाल और मानस (2008) ने स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों के पर्यावरणीय आचरण के अध्ययन में पाया कि इन विद्यार्थियों का आचरण पर्यावरण के अनुकूल है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा यह जानने का प्रयत्न किया गया है कि छात्रों के वंचन की मात्रा किस सीमा तक उनके पर्यावरण मूल्यों को प्रभावित करती है।

अध्ययन के उद्देश्यः

(1) निम्न, औसत और उच्च वंचित छात्रों के पर्यावरण मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(2) निम्न, औसत और उच्च वंचित छात्रों के वंचन और पर्यावरण मूल्यों के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

---

* शोध छात्रा, (यू०जी०सी०–नेट), श्री अग्रसेन कन्या स्वायत्तशासी महाविद्यालय, वाराणसी।

अध्ययन विधिः प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

न्यादर्शः न्यादर्श के रूप में वाराणसी जिले में यू०पी० बोर्ड के कक्षा–9 के 100 छात्रों में से 22 निम्न वंचित, 61 औसत वंचित तथा 17 उच्च वंचित छात्रों का चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

वंचित छात्रों के चयन के लिए एस.के.पाल, के॰ एस॰ मिश्रा और कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित 'वंचन मापनी' (डी–स्केल) का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में वंचन के पाँच आयाम हैं– सामाजिक, सांवेगिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा पैतृक वंचन। प्रत्येक आयाम से सम्बन्धित 14 प्रश्न है। मापनी से प्राप्त उच्च अंक, उच्च वंचन को तथा निम्न अंक, निम्न वंचन को दर्शाते हैं।

छात्रों के मूल्यों को मापने के लिए कल्पलता पाण्डेय एवं गीता निर्मित 'सद्गुण बोध प्रश्नावली' का प्रयोग किया गया है। इस प्रश्नावली में कुल आठ मूल्य हैं– देशभक्ति, संवैधानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, आध्यात्मिक, ज्ञान एवं उत्कृष्टता मूल्य। जिसमे से पर्यावरण मूल्य को ही इस अध्ययन के लिए चुना गया है।

परिणाम एवं व्याख्या

निम्न, औसत और उच्च वंचित छात्रों के पर्यावरण मूल्य के मध्यमानों की तुलना हेतु टी–अनुपात की गणना की गई। निम्न, औसत व उच्च वंचित छात्रों के वंचन और पर्यावरण मूल्य के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करने के लिए गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई है। जिनका विवरण तालिका 1 एवं 2 में दिया गया है।

सारणी–1 निम्न, औसत और उच्च वंचित छात्रों के पर्यावरण मूल्य के मध्य अंतर का विवरण

वंचित छात्र समूह	मध्यमान	मानक विचलन	तुलनात्मक समूह	टी–अनुपात
निम्न वंचित छात्र	19.82	2.79	निम्न एवं औसत वंचित छात्र	0.81
औसत वंचित छात्र	19.16	4.39	औसत एवं उच्च वंचित छात्र	2.50*
उच्च वंचित छात्र	16.18	4.37	निम्न एवं उच्च वंचित छात्र	3.01**

**0.01 स्तर पर सार्थक, *0.05 स्तर पर सार्थक।

सारणी–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि निम्न वंचित छात्रों का मध्यमान (19.82) औसत वंचित छात्रों के मध्यमान (19.16) से अधिक है। निम्न और औसत वंचित छात्रों के मध्यमान का अन्तर 0.66 है क्योंकि टी–अनुपात का मान 0.81 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह परिकल्पना कि निम्न वंचित और औसत वंचित छात्रों के पर्यावरण मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकार्य है। औसत वंचित छात्रों का मध्यमान (19.16), उच्च वंचित छात्रों के

मध्यमान (16.18) से अधिक है। औसत और उच्च वंचित छात्रों के मध्यमान का अन्तर 2.98 है। मध्यमान मे यह अन्तर सार्थक है क्योंकि टी–अनुपात का मान 2.50 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः यह परिकल्पना कि औसत वंचित और उच्च वंचित छात्रों के मध्य पर्यावरण मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकार्य है। अर्थात् औसत वंचित छात्रों में पर्यावरणीय मूल्य निम्नवंचित छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

सारणी के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि निम्न वंचित छात्रों का मध्यमान (19.82), उच्च वंचित छात्रों के मध्यमान (16.18) से अधिक है तथा टी–अनुपात का मान 3.01 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः यह परिकल्पना कि निम्न वंचित व उच्च वंचित छात्रों के पर्यावरण मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है अस्वीकार्य है। अर्थात् निम्न वंचित छात्र उच्च वंचित छात्रों की अपेक्षा पर्यावरण मूल्य के प्रति अधिक जागरुक है।

सारणी–2 निम्न, औसत और उच्च वंचित छात्रों के पर्यावरण मूल्य के मध्य सहसम्बन्ध का विवरण

वंचन स्तर	*सहसम्बन्ध गुणांक*
निम्न वंचित छात्र (N=22)	0.82**
औसत वंचित छात्र (N=61)	0.41**
उच्च वंचित छात्र (N=17)	0.44*

**0.01 स्तर पर सार्थक, *0.05 स्तर पर सार्थक।

सारणी–2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि निम्न वंचित छात्रों के वंचन और पर्यावरण मूल्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.82 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। औसत वंचित छात्रों के वंचन और पर्यावरण मूल्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.41 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। उच्च वंचित छात्रों के वंचन और पर्यावरण मूल्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.44 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः यह परिकल्पना कि निम्न वंचित और उच्च वंचित छात्रों के वंचन और पर्यावरण मूल्यों के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है, अस्वीकार्य है।

प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषणोपरान्त यह कहा जा सकता है कि निम्न और औसत वंचित छात्रों में पर्यावरण मूल्य उच्च वंचित छात्रों की अपेक्षा अधिक है। इसका सम्भावित कारण यह है कि ये छात्र उच्च वंचित छात्रों की अपेक्षा अधिक सुविधा सम्पन्न होते हैं तथा आधुनिक संचार माध्यमों के द्वारा बड़ी आसानी से नवीनतम जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। ये पर्यावरण संरक्षण के लिए बनाये गये नियमों एवं कानूनों की अधिक जानकारी रखते हैं तथा अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक एवं क्रियाशील रहते हैं। उच्च वंचित छात्रों में पर्यावरण मूल्य का कम होना इस तथ्य को प्रकट करता है कि वंचन का प्रभाव इनके पर्यावरण मूल्य पर पड़ रहा हैं। सिंह (1993) ने अध्ययन में पाया कि वंचन की मात्रा का प्रभाव छात्रों के मूल्यों को प्रभावित करता है। शैक्षिक

उपलब्धताओं में कमी, उचित वातावरण का अभाव, शिक्षक द्वारा सहयोग का अभाव, माता–पिता की आर्थिक परेशानी तथा उनके द्वारा शैक्षिक कार्यों में सहयोग न मिलने के कारण ये छात्र अधिक वंचित होते हैं, जिसका प्रभाव इनके मूल्यों पर पड़ रहा है।

अध्ययन में यह पाया गया कि निम्न वंचित छात्रों तथा उनके पर्यावरण मूल्यों के मध्य उच्च सकारात्मक सहसम्बन्ध है जबकि उच्च वंचित छात्रों तथा उनके पर्यावरण मूल्यों के मध्य सहसम्बन्ध निम्न किंतु सकरात्मक है। स्पष्ट है कि जैसे–जैसे वंचन की मात्रा कम होती जाती है पर्यावरण मूल्यों के प्रति जागरूकता भी बढ़ती जाती है। अग्रवाल (2008) के अध्ययन के अनुसार उच्च वंचित छात्र, पर्यावरण मूल्य को अपने मूल्य वरीयता क्रम (देशभक्ति, संवैधानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, आध्यात्मिक, ज्ञान और उत्कृष्टता मूल्यों) में सबसे अंतिम स्थान देते हैं। स्पष्ट है कि उच्च वंचित छात्र पर्यावरण मूल्य को कम महत्व देते हैं क्योंकि वंचन की मात्रा उनके पर्यावरण के प्रति जानकारी तथा जागरुकता पर प्रभाव डालती है।

शोध के परिणामों से ज्ञात होता है कि वंचन की मात्रा या स्तर का प्रभाव छात्रों के पर्यावरण मूल्य को प्रभावित करता है। विद्यार्थियों में आस–पास के परिवेश, वातावरण, भौतिक सम्पन्नता, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति, संस्कृति, ज्ञान इत्यादि के अनुरूप मूल्य विकसित होते हैं। जिस तरह का परिवेश छात्रों को मिलेगा उनके मूल्य भी वैसे ही विकसित होंगे। जब छात्र आर्थिक, सामाजिक, पैतृक, सांवेगिक एवं सांस्कृतिक सुविधाओं से वंचित होंगे तो निश्चय ही इसका प्रभाव उनके पर्यावरण मूल्यों को भी प्रभावित करेगा। उच्च वंचित छात्रों में पर्यावरणीय मूल्यों का कम होना चिन्ता का विषय है। सर्वप्रथम वंचन की मात्रा या स्तर को कम करने के लिए सरकारी नीतियों के साथ–साथ शिक्षकों तथा माता–पिता को भी ठोस प्रयास करने होंगे। शिक्षक उचित माध्यम तथा आकर्षक तरीके से पर्यावरण के प्रति छात्रों में जागरुकता पैदा कर सकते है। पर्यावरण के महत्व को मात्र सैद्धान्तिक तरीके से ही नहीं वरन् व्यवहारिक ढंग से भी पढ़ाना होगा, जिससे उच्च वंचित छात्रों में भी पर्यावरण मूल्य के प्रति सकरात्मक सोच उत्पन्न हो सके। वर्तमान समय में पर्यावरण मूल्य की महत्ता को समझते हुए शिक्षाविदों ने इसे एक अलग विषय के रुप में प्राथमिक स्तर पर ही लागू करने पर बल दिया है।

यह शोध सुझाव देता है कि वंचन की मात्रा को कम करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप, सरकारी व्यवस्थाओं तथा नीतियों को लचीला बनाया जाना चाहिए। वंचन की मात्रा को कम करने के साथ–साथ पर्यावरण मूल्य के संवर्धन हेतु विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों जैसे–सेमिनार, कार्यशाला, चित्र–प्रदर्शनी एवं वाद–विवाद प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे छात्र पर्यावरण मूल्य के प्रति जागरुक बन सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- अग्रवाल, एम० (2008) ट आफ़ डीप्राइवेशन ऑन वैल्यू प्रीफेरेन्स" राष्ट्रीय सेमिनार में प्रस्तुत रिसर्च पेपर, इलाहाबाद, डिपार्टमेण्ट ऑफ एजुकेशन, 1–9।
- आनन्द, अ० (2002). "स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटवीन ऍन्वायरन्मेन्टल अवेयरनेस एण्ड साइन्टिफिक एटीटयूड्स अमंग हायर सेकेन्ड्री स्टूडेन्ट्स ऑफ वाराणसी सिटी", पी एच० डी०, फेकल्टी ऑफ एजुकेशन, बी० एच० यू०, 25–35।
- एनुवल रिपोर्ट (2000–2001). "मिनिस्ट्री ऑफ ऍन्वायरन्मेन्ट एण्ड फॉरेस्ट्स", गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, पृ० 12।
- कालिया, ए० के० एण्ड माथुर एस० एस० (1986). "वैल्यू प्रीफरेन्स आफ एडोलसेन्ट्स स्टडिंइग इन स्कूल विथ डिफरेन्ट सोसियो–इकोनॉमिक ऍन्वायरन्मेन्ट्स", इण्डियन साइकोलॉजिकल एब्सट्रैक्ट, पृ० 15।
- गर्ग, राजीव (1977). "पर्यावरण शिक्षा", नई दिल्ली, अविराम प्रकाशन पृ० 35–50।
- जॉस, हैरोल्ड एच० (1978). "द इफैक्ट ऑफ ऍन्वायरन्मेन्टल एजुकेशन इन्स्ट्रक्शन ऑन टीचर एटीच्यूड टुवर्ड्स टीचिंग ऍन्वायरन्मेन्टल एजुकेशन", साइन्स एजुकेशन, vol.62, No.1, Jan-March 74-78।
- पाण्डेय, के० (1987). "डीप्राइव्ड स्टूडेण्ट्स कॉग्नीटीव प्रोसेसेस मोटिव एण्ड अचीवमेन्ट", वाराणसी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद, 25–30।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय (1986,1992). "नेशनल पॉलिसी आन एजुकेशन" 22–30।
- मोहाल, आइ० (1988). "ऍन्वायरन्मेन्टल एवेयरनेस एण्ड अरबन डेवलपमेन्ट", न्यू डेलही, आशीष प्रकाशन, 43।
- राठौर एच० सी० एस०, भट्टाचार्या जी० सी०, सिंह एस० के०, सिंह एम० के०, गार्डिया ए० (2008). "समाज एवं पर्यावरणीय आचार", वाराणसी, एलिमुनाई एसोशियेशन ऑफ एजुकेशन, बी० एच० यू०, 222–238।
- सिंह, एन० के० (1993). "ए साइको–सोसल स्टडी आफ द डीप्राइव्ड एण्ड द नान–डीप्राइव्ड एडोलसेन्ट्स", (एजुकेशन), बी० एच० यू०, 25–47।
- हार्ट, पाल एण्ड मैकक्लेरन, (1978). "एटीच्यूड ऑफ हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स टुवर्ड्स ऍन्वायरन्मेन्टली ओरियेन्टेड इशूज़", साइन्स एजुकेशन, vol.62, No.4,Oct.Dec।